



सांवां की प्राकृतिक खेती

अर्चना देवी*, प्रीती कुमारी** और डी.के. द्विवेदी***

❖ असिंचित क्षेत्रों में बोये जाने वाले श्रीअन्न में सांवां का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की एक प्राचीन फसल है। यह सामान्यतः असिंचित क्षेत्र में बोयी जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। इसमें पानी की आवश्यकता अन्य फसलों से कम है। हल्की नम व उष्ण जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम होती है। सामान्यतः सांवां का उपयोग चावल की तरह किया जाता है। उत्तर भारत में सांवां की खीर बड़े चाव से खाई जाती है। इसका हरा चारा पशुओं को बहुत पसंद है। इसमें चावल की तुलना में अधिक पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसमें पाई जाने वाली प्रोटीन की पाचन शक्ति सबसे अधिक (40 प्रतिशत) होती है। ❖

सांवां की फसल कम उपजाऊ वाली मृदा में बोई जाती है। इसके लिए हल्की नम व उष्ण जलवायु उपयुक्त होती है।

मृदा

इसे आंशिक रूप से जलाक्रांत मृदा जैसे नदी के किनारे की निचली भूमि में भी उगाया जा सकता है। इसके लिए बलुई दोमट

*वैज्ञानिक, पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटवा, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश); **ज्येष्ठ कृषि विपणन निरीक्षक, जौनपुर (उत्तर प्रदेश); ***प्राध्यापक, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या-224229 (उत्तर प्रदेश)

व दोमट मृदा, जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व सर्वाधिक उपयुक्त है।

खेत की तैयारी

मानसून के प्रारंभ होने से पहले खेत की जुताई आवश्यक है, जिससे खेत में नमी की मात्रा संरक्षित हो सके। मानसून के प्रारंभ होने के साथ ही रोटावेटर से पहली जुताई तथा 2-3 जुताई कल्टीवेटर से करके खेत को भलीभांति तैयार कर लेना अधिक पैदावार के लिए उपयुक्त बनाया जाता है। इसके साथ ही खेत को अधिक उपजाऊ बनाने के लिए इसमें 60-70 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाई जाती है।

बुआई का समय

सांवां की बुआई का उत्तम समय 15 जून से 15 जुलाई तक है। मानसून प्रारंभ होते ही इसकी बुआई छिटकवां विधि से या कूड़ों में 3-4 सें.मी. की गहराई में की जाती है। पंक्तियों के बीच की दूरी 25 सें.मी. रखी जाती है।

बीज दर

प्रति हैक्टर: 8 से 10 कि.ग्रा.।

बीजामृत से करें बीज शोधन

विधि: देसी गाय का गोबर 5 कि.ग्रा., गोमूत्र 5 लीटर, चूना 50 ग्राम और बरगद या पीपल के नीचे की एक मुट्ठी जीवांश मृदा, 20 लीटर पानी में मिलाकर 24 घंटे रखें। इसे दिन में दो बार लकड़ी से घोलें। इससे 100 कि.ग्रा. बीजों का उपचार करें। इसे छांव में सुखाकर बोयें। बीजामृत से बीज का उपचार करने से लगभग 40-50 प्रतिशत तक बीजजनित रोग दूर हो जाते हैं।

फसल सुरक्षा

नीमास्त्र

रस चूसने वाले कीट जैसे-माहूं, बग, पत्ती फुदका आदि तथा छोटी सूंडी या इल्लियों के नियंत्रण के लिए नीमास्त्र का प्रयोग करना चाहिए। नीमास्त्र में पानी मिलाने की आवश्यकता नहीं होती। छिड़काव 1 से 8 दिनों के छोटे पौधे पर करना हो, तो नीमास्त्र में 50 प्रतिशत पानी मिलाने के बाद ही स्प्रे करना चाहिए अन्यथा छोटे पौधे का नष्ट होने का खतरा बना रहता है।

ब्रह्मास्त्र

यह फसलों को या छेदक कीटों के बचाव करने के लिए है। ब्रह्मास्त्र की 2 से 2.5 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टर छिड़काव करने से कीटों से बचाव होता है।

इसके उपयोग करने का उचित समय सुबह 6:00 से 8:30 पूर्वाह्न तथा शाम 4:00 से 6:30 अपराह्न है।

प्रजातियां

मदिरा 21, मदिरा 29, व चंदन अन्य नई उन्नत प्रजातियां हैं।

प्राकृतिक खाद का उपयोग

प्राकृतिक खाद का उपयोग लाभकारी होता है। आवश्यक पोषक तत्वों को मृदा में प्रदान करने के साथ-साथ यह जलधारण क्षमता को भी बढ़ाता है। मानसून के बाद पहली जुताई के समय 5 से 10 टन प्रति हैक्टर की दर से कंपोस्ट खाद खेत में मिलानी लाभकारी होती है।

जीवामृत

जीवामृत, सूक्ष्म जीवाणुओं का महासागर है, जिसे पेड़-पौधों के लिए कच्चे पोषक तत्वों को पकाकर पौधों के लिये भोजन तैयार करते हैं। गोमूत्र 5-10 लीटर, गाय का गोबर 10 कि.ग्रा., गुड़ 1-2 कि.ग्रा., मूंग उड़द या मक्का, चने का बेसन 1-2 कि.ग्रा., बरगद या पीपल के नीचे की जीवांश मृदा (100 ग्राम), 200 लीटर पानी, 200 लीटर के ड्रम में मिलाकर 2-3 दिनों के लिए छांव में रख दें एवं प्रत्येक दिन सुबह और शाम को 2-3 मिनट तक घड़ी की सुई की दिशा में चलाएं। अब इस मिश्रण को छानकर सात दिनों के अन्दर प्रयोग करें।

जीवामृत प्रयोग विधि

एक एकड़ में 200 लीटर जीवामृत पानी के साथ टपक विधि से या धीमे-धीमे बहा दें। पहला छिड़काव बुआई के एक माह बाद एक एकड़ में 100 लीटर पानी में 5 लीटर जीवामृत मिलाकर करें। दूसरा छिड़काव 21 दिनों बाद एक एकड़ में 150 लीटर पानी व 10 लीटर जीवामृत मिलाकर दें। आखिरी छिड़काव दाने की दूधिया अवस्था में प्रति एकड़ में 200 लीटर पानी एवं 5-10 लीटर खट्टी छाछ (मट्ठा) के साथ करें।

घन जीवामृत

घन जीवामृत जीवाणुयुक्त सूखी खाद है। इसे बुआई के समय या पानी देने के तीन दिन बाद भी दे सकते हैं। गोबर 100 कि.ग्रा., गुड़ 1-2 कि.ग्रा., मूंग उड़द या मक्का, चने का बेसन 1-2 कि.ग्रा., बरगद या पीपल के नीचे की जीवांश मृदा (100 ग्राम) उपयुक्त सामग्री में इतना गोमूत्र (लगभग 5 ली0) मिलायें, जब खाद हलवा/पेस्ट जैसा बन जाये, तो इसे 48 घंटे छाया में बोरी से ढककर रखें। इसके बाद छाया में ही फैलाकर सुखा लें और बारीक करके बोरी में भरें। इसका इस्तेमाल 6 माह तक प्रयोग किया जा सकता



पौष्टिकता से भरपूर सांवां

सारणी 1. पोषक तत्व की मात्रा (प्रत्येक 100 ग्राम में)

फसल	प्रोटीन (ग्राम)	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	वसा	कूड फाइबर	लौह तत्व	कैल्शियम (मि.ग्रा.)	फॉस्फोरस (मि.ग्रा.)
चावल	6.8	78.2	0.5	0.2	0.6	10.00	60.0
सांवां	11.6	74.3	5.8	14.7	4.7	14.0	121.0

सारणी 2. विभिन्न प्रजातियों की उपज

प्रजाति	पकने की अवधि (दिवस में)	पौधे की लम्बाई (सें.मी.)	बाली की लम्बाई (सें.मी.)	पौधों का रंग	उपज (क्विंटल/हैक्टर)
टी.-46	-	-	-	-	10-12
उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से चिन्हित					
आई.पी.-149	80-90	145	25-26	हल्का भूरा रंग	12-13
यू.पी.टी.-8	74-80	126-130	-	हल्का भूरा रंग	12
आई.पी.एम.-100	65-67	130-140	-	हल्का भूरा रंग	10-12
आई.पी.एम.-148	77-86	150-162	-	हल्का भूरा रंग	11-12
आई.पी.एम.-151	80-88	135-162	14-17	हल्का भूरा रंग	12-13

है। एक एकड़ में एक क्विंटल घन जीवामृत देना चाहिए।

सिंचाई

सामान्यतः सांवां की खेती में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब वर्षा लंबे समय तक रुक गई हो, तो पुष्प आने की स्थिति में एक सिंचाई आवश्यक हो जाती है। जलभराव की स्थिति में पानी की निकासी की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए।

कटाई व मड़ाई

पकने पर पौधों की कटाई जड़ से की जानी चाहिए। इसका गट्टर बनाकर खेतों में एक सप्ताह के लिए सूखने हेतु रखने के उपरान्त मड़ाई की जानी चाहिए।

उपज: दाना 15 से 20 क्विंटल प्रति हैक्टर।

भूसा: 20-25 क्विंटल प्रति हैक्टर।

भंडारण

भंडारण करते समय उसमें नमी की मात्रा 10-12 प्रतिशत होनी चाहिए। सुखाने के बाद बीज को थैलों में भरकर ऐसी जगह रखना चाहिए, जहां वर्षा का पानी न जा सके तथा चूहों आदि का प्रकोप भी न हो।

मुख्य बिंदु

- उपचारित बीज का प्रयोग
- जैविक खाद का प्रयोग संस्तुति के अनुसार
- फसल सुरक्षा पर विशेष ध्यान